श्री अरनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा० ब्र० संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री अरनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.-9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1 ॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2 ॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3 ॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4 ॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5 ॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6 ॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7 ॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी ॥ 8 ॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे ॥ 9 ॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री अरनाथ विधान

जय बोलिये

परम प्रभावक,
जिनमत विधायक,
मिथ्यात्व विनाशक,
सम्यक्त्व प्रकाशक,
बहिरात्म-हारी,
परमात्म विहारी,
निर्ग्रन्थ निराकुल,
जिनायतन के संकुल,
अरिहन्त जिनेश्वर,
परमेष्ठी परमेश्वर
परमपूज्य
श्री अरनाथ भगवान् की जय॥

भजन

(विष्णु)

प्रभु को पाने लक्ष्य बने तो, शीघ्र जयोस्तु हो।
तीर्थंकर अरनाथ प्रभु को, अतः नमोस्तु हो॥

चन्दा सूरज से क्या हमको, क्या हीरे मोती।
हमें दिला दो हे ! प्रभु अपनी, बस सम्यग्ज्योति॥
सम्यग्ज्योति पा नहिं चाहें, कोई वस्तु को।
तीर्थंकर अरनाथ ....॥ 1॥

मुमुक्षु बनके वसुंधरा को, तिनका समझ तजे।
रूप आपका इन्द्र देखने, नेत्र हजार करे॥
ऐसी निस्पृहता हमको भी, दो सुखमस्तु हो।
तीर्थंकर अरनाथ ....॥ 2॥

हमने सुना तुम भक्त जनों के, भाग्य सितारे हो।
लिखो हमारी किस्मत में प्रभु, आप हमारे हो॥
हम भी तेरे हो ही चुके तो, कल्याणमस्तु हो।
तीर्थंकर अरनाथ ....॥ 3॥

तेरे चरणों से तो हमारे, कैसे रिश्ते हैं।
जिधर देखते आप-आप ही हमको दिखते हैं॥
कहीं न जो मिलता वह पाके, शान्ति-रस्तु हो।
तीर्थंकर अरनाथ ....॥ 4॥

क्या-क्या खोये, कितना रोये, पता नहीं इसका।
रोना खोना जो छुड़वा दे, पता खोज उसका॥
'सुव्रत' सब कुछ खोने आये, तो सुखमस्तु हो।
तीर्थंकर अरनाथ ....॥ 5॥

श्री अरनाथ विधान

स्थापना

(दोहा)

अन्तरंग बहिरंग की, लक्ष्मी के भगवंत।
परमपूज्य अरनाथ को, नमन रहे जयवंत॥

(शिखरणी) (लय : महावीराष्टक)

हजारों फूलों से, अधिक जिनकी गंध महके।
करोड़ों सूर्यों से, अधिक जिनका तेज चमके॥
अनंतों जन्मों में, इस तरह हो पुण्य अर्जन।
तभी मिल पायेंगे, अरह प्रभु के देव-दर्शन॥

किया होगा कोई, गत समय में पुण्य हमने।
इसी से पायी है, मनुज भव पर्याय हमने॥
बने हैं जैनी तो, अरह जिन को वंदन करें।
झुका के माथा भी, विनय करके अर्चन करें॥

हमारी आत्मा में, प्रकट परमात्मा तुम करो।
नहीं तो श्रद्धा के, निलय मन को पावन करो॥
हमारी नैया को, जिनवर तुम्हीं पार कर दो।
इसी से भक्ति के, वर सुमन स्वीकार कर लो॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं....)

(शुद्धगीता)

लिए श्रद्धा सरस जल हम, विनय से अब चढ़ायेंगे।
यही विश्वास है हमको, निजातम शुद्ध पायेंगे॥
जरा-सा नीर तो छिड़को, तुरत हम जाग जायेंगे।
नमोस्तु कर, अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जायेंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं.....।

रसायन मंत्र मणियों में, न शांति है तो क्यों जायें।
तभी चंदन चढ़ा के हम, प्रभु सम शांति झलकायें॥
जरा समता जिनामृत दो, निराकुल रूप पायेंगे।
नमोस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जायेंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

बड़े दुर्लभ मगर आसाँ, सहज नाते हमारे हैं।
हृदय में तुम हमारे हो, चरण में हम तुम्हारे हैं॥
चढ़ाकर पुंज हम तुमको, तुम्हीं में डूब जायेंगे।
नमोस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जायेंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

हुयी सुर पुष्प वृष्टि जो, न उल्टे हों गिरे नीचे।
विकारी भाव हरने को, तुम्हारे रूप पर रीझे॥
सुकोमल पुष्प सा आतम, चढ़ा हम पुष्प पायेंगे।
नमोस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जायेंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

चखा हर स्वाद दुनियाँ का, मगर ना तृप्त हो पाये।
तेरी इक बूँद के प्यासे, तभी जिन तीर्थ पर आये॥
बहा दो ज्ञान की धारा, निजी नैवेद्य पायेंगे।
नमोस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जायेंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

सदा तुमको निहारें हम, हमें क्यों तुम निहारो ना।
अँधेरे में फँसे हमको, उजाला क्यों दिखाओ ना॥
तुम्हारी आरती करके, तुम्हीं सम जगमगायेंगे।
नमोस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जायेंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

पका दो इस तरह हमको, घड़ा कोई पके जैसे।
करम की मार सब सह लें,कि चमके शुद्ध सोने से॥
चढ़ाकर धूप हम तुमको, करम-काजल जलायेंगे।
नमोस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जायेंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

नहीं कुछ भी दिया तुमने, मगर सब कुछ तुम्हारा है।
मिलन तुमसे हमारा ही, मिलन हमसे हमारा है॥
मिटाने दूरियाँ सारी, चरण में फल चढ़ायेंगे।
नमोस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जायेंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

जमाने में उलझ कर हम, तुम्हारा नाम खो बैठे।
सुलझने की दिलाशा में, भुलाकर आत्म रो बैठे॥
भुला दो नाथ भूलें तो, चढ़ा हम अर्घ्य पायेंगे।
नमोस्तु कर अरह प्रभु के, दरश को मोक्ष जायेंगे॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

फाल्गुन शुक्ला तीज को, तजकर स्वर्ग जयंत।
मित्रसेना के गर्भ में, वसे अरह भगवंत॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चौदस अगहन शुक्ल में, जन्मे अरह अडोल।
पिता सुदर्शन के यहाँ, भक्त बजाएँ ढोल॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दशमी अगहन शुक्ल को, देखे मेघ विनाश।
सन्त अरह प्रभु को नमन, जो धारे संन्यास॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्लदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

बारस कार्तिक शुक्ल को, हरे घातिया धूल।
अरह केवली को नमन, अर्पित श्रद्धा फूल॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चैत अमावस कृष्ण में, मोक्ष लिए प्रभु लूट।
नमन करें अरनाथ को, पूजें नाटककूट॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण-अमावश्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(दोहा)

परम पूज्य अरनाथ जो, हैं सप्तम चक्रेश।
चौदहवे रतिनाथ हैं, अष्टदशम् तीर्थेश॥
त्रिजग-ईश त्रय कर्म हर, भव-सागर के पार।
जय-जय की जयमालिका, कहें त्रियोग सँभार॥

(ज्ञानोदय)

जय-जय श्री अरनाथ जिनेश्वर, आप सर्वगुण सुंदर हैं।
पर भावों में अतः फसे ना, बन गए पूर्ण दिगम्बर हैं॥
षट्-खण्डों के रहे विजेता, फिर भी नित्य निरम्बर हैं।
इसीलिए तो चरण शरण में, झुकते धरती अम्बर हैं॥ 1॥

इनके दर्शन-भर करने से, उर में निर्मलता आती।
पूजन से सब पातक कटते, पुण्य-आवली शर्माती॥
चिंतन मनन ध्यान जप-तप से, निज स्वभाव सा झलक रहा।
तभी आपके गुणगाने को, हृदय हमारा ललक रहा॥ 2॥

ज्ञानी ध्यानी सुर विद्यायें, कह न सके कवि पण्डित जो।
उनके गुण हम क्या गायेंगे, आप स्वयं में मण्डित जो॥
फिर भी जहाँ सूर्य ना जाता, वहाँ दीप क्या जलें नहीं?
बच्चे बाहें फैलाकर क्या, सागर का जल कहें नहीं?॥ 3॥

पिछले भव में धनपति राजा, तीर्थंकर प्रकृति बाँधें।
गये स्वर्ग संन्यास मरण कर, मनुज बने जब सुर त्यागें॥
गर्भ जन्म का पर्व सुदर्शन, राजा रानी पाये थे।

स्वर्ग-सुखों को त्याग-त्याग कर, देव पर्व में आये थे॥ 4॥

चौदह रत्न नवो निधि भोगी, पर देखा जब मेघ विलय।
आत्मज्ञान वैराग्य हुआ तब, लौकान्तिक बोले जय-जय॥
राज्य दिया अरविन्द पुत्र को, स्वयं वैजयंती से जा।
लिए सहेतुक वन में दीक्षा, चौथा ज्ञान तुरत उपजा॥ 5॥
चक्रपुरी नृप अपराजित के, हुई पारणा दीक्षा की।
आम्र तरू-तल बने केवली, जगह वही थी दीक्षा की॥
बारह भरी सभाएँ जिनको, तत्त्वज्ञान अरनाथ दिए।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, महामोक्ष प्रभु प्राप्त किए॥ 6॥

किया धर्म-पुरुषार्थ तभी तो, तीन-तीन पद अपनाए।
किया काम-पुरुषार्थ तभी तो, पुत्र रत्न निज घर आए॥
किया अर्थ-पुरुषार्थ तभी तो, चक्र रत्न खुद प्रकटाए।
किया मोक्ष-पुरुषार्थ तभी तो, सिद्धचक्र अर प्रभु पाए॥ 7॥

कामदेव का जन्म हुआ पर, काम-देव ना जन्म सका।
चक्री के उस चक्र रत्न का, जिन पर चक्कर चल न सका॥
तीर्थंकर ने कर्म-चक्र की, चुन-चुन कर चटनी बाँटी।
विधि चोटी पर चोट लगाकर, चढ़े मोक्ष की प्रभु घाटी॥ 8॥

जिनका नाम अकेला सुनकर, निधियाँ रत्न चक्र दौड़ें।
उनका नाम कहो बुध ग्रह में, सीमित करके क्यों जोड़ें ?
पाप शत्रु का मान मरोड़े, राज-रसोड़े जो छोड़े।
राज-रमा घट-दासी जैसी, चक्ररत्न घट-सा छोड़े॥ 9॥

इसी तीर्थ में सुभौम चक्री, नन्दिषेण बलभद्र हुए।
पुण्डरीक छठवे नारायण, प्रतिनारायण निशुम्भ हुए॥
ऐसे श्री अरनाथ देव से, एक प्रार्थना बस यह हो।
रत्नत्रय से मुक्ति वधू से, चट मँगनी पट विवाह हो॥ 10॥

किया नमोस्तु यदि जिनवर को, बिन मन से बिन समझे में।
उतना फल तो अन्य जगह पर, मिल न सकेगा, जीवन में॥
फिर 'सुव्रत' ने त्रियोग पूर्वक, किए नमोस्तु चरण भजे।
दिवस दशहरा रात दिवाली, फिर क्या ना हो मजे-मजे॥ 11 ॥

(सोरठा)

चरण शरण में मीन, चिह्न सदा ही शोभता।
जो हैं कमलासीन, उन्हें जगत् नित खोजता॥
वो हैं अर जिनराज, जो शुद्धातम सुख भरें।
उन्हें नमोस्तु आज, हम पर भी करुणा करें॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

अरहनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, अरहनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(18 दोष वर्णन) (स्रग्विणी)

मोह से भूख ऐसी सताए सदा, पाप निंदा भरी रोज देती सजा।
आपने वेदना भूख की नाश के, शुद्ध ज्ञानामृती आत्मा को चखा॥
भूख की वेदना नष्ट हम भी करें, आत्म संतुष्ट हो आप जैसे रहें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोस्तु करें॥1 ॥

ॐ ह्रीं क्षुधानिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्यास से कण्ठ तालू जहाँ सूखते, किन्तु मरते नहीं प्राण से सूखते।
तुम पिपासा नशा ज्ञान रस को पिये, तो तुम्हारे लिए भक्त नित पूजते॥
ज्ञान गंगा हमें प्रेम की अब पिला, आप ही ये पिपासा हमारी हरें।

दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोस्तु करें॥ 2॥

ॐ ह्रीं पिपासानिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कुछ दिखाई न दे कुछ सुनाई न दे, हाय! बूढ़े सहें नर्क सी ताड़ना।
आप हो आप में, हो विनश्वर नहीं, दुख बुढ़ापा हरे, दूर की यातना॥
अब दिला के जिनाश्रय निजाश्रय हमें, यह पराश्रय बुढ़ापा हमारा हरें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोस्तु करें॥ 3॥

ॐ ह्रीं वृद्धावस्थानिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पित्त कफ वात के रोग करते दुखी, कौन माटी भरी देह में हैं सुखी।
देह में आप रहके विदेही बने, शुद्ध आत्मस्थ हो स्वस्थ अन्तर्मुखी॥
आप गर्भस्थ करके निरोगी करें, रोग तन मन वचन के हमारे हरें।
दोष अपराध अरनाथ होवे क्षमा, हम इसी भावना से नमोस्तु करें॥ 4॥

ॐ ह्रीं रोगनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कर्म जंजीर में विश्व ऐसे फँसे, जीव उत्पन्न चारों गती में हुए।
खूब कष्टों भरे जन्म को तुम हरे, बस इसी से चरण हम तुम्हारे छुए॥
आप निर्बन्ध निर्द्वन्द दें आतमा, गर्भ की जन्म की वेदना भी हरें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोस्तु करें॥ 5॥

ॐ ह्रीं जन्मनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

है भयंकर महा वेदना मृत्यु की, कौन जीते इसे कौन टाले इसे।
आप ध्यानस्थ मृत्युंजयी बन गए, अब किसे खोजना पूजना है किसे?
दे समाधी निराकुल भरी आतमा, मृत्यु की मृत्यु कर वेदना भी हरें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोस्तु करें॥ 6॥

ॐ ह्रीं मृत्युनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो कँपा दे हमें डर दिला दे हमें, सात ऐसे भयों से जमाना डरे।
आप आतम किले में सुरक्षित हुए, भय तभी तो तुम्हारे चरण में गिरे॥
दे दिगम्बर अभय रूप मुद्रा हमें, भय हमारे हरें, शीघ्र निर्भय करें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोस्तु करें॥ 7॥

ॐ ह्रीं भयनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जाति कुल आदि आठों मदों से मदित, जीव अभिमान से जल रहे हैं अहो।
आप उपसर्ग परिषह सहे निज रमे, इसलिए आप सम्मान के योग्य हो॥
हम जलें तो मगर दीप जैसे जलें, ये अहंकार ज्वाला हमारी हरें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोस्तु करें॥ 8॥

ॐ ह्रीं गर्वनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

वस्तुएँ इष्ट पाके हुई प्रीति जो, प्राणियों को वही कष्ट की रीति हो।
आपने आपको आपमें वर लिया, सो तभी राग की नष्ट की नीति हो॥
आपकी भक्ति से आत्म की प्रीति को, राग की प्रीति को नष्ट तुम सम करें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोस्तु करें॥ 9॥

ॐ ह्रीं इष्ट रागनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(अडिल्ल)

अनिष्ट वस्तु में अप्रीति परिणाम जो।
द्वेष वही करवाता निज संग्राम हो॥
हरने तुम सम द्वेष हमें आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥ 10॥

ॐ ह्रीं द्वेषनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पर स्वभाव को अपना कहना मोह है।
अहं बुद्धि तज अर्हम् पाते मोक्ष हैं॥
हरने तुम सम द्वेष हमें आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥ 11॥

ॐ ह्रीं मोहनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

इष्ट प्राप्ति के, अनिष्ट हरण के भाव जो।
चिन्ता-चिता जलाती आत्म स्वभाव को॥
चिन्ता तुम सम हरें हमें आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥ 12॥

ॐ ह्रीं चिंतानिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अनिष्ट वस्तुएँ मिल जाने से, कष्ट हो।
वही अरति जिससे होता पथ-भ्रष्ट हो॥
अरति आप सम हरें हमें आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥ 13॥

ॐ ह्रीं अरतिनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअर नाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पाँचों निद्राएँ रोकें निज दर्श को।
निद्रा विजयी आप जगत् आदर्श हो॥
निद्रा जय करने हम को आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥ 14॥

ॐ ह्रीं निद्रानिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअर नाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

होते जो आश्चर्य रूप परिणाम हैं।
विस्मयहर्त्ता प्रभु को नम्र प्रणाम हैं॥
विस्मय जय करने हमको आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥ 15॥

ॐ ह्रीं विस्मयनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअर नाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तत्त्व ज्ञान जो हर्त्ता वो ही मद रहा।
रूप दिगम्बर मद-हर्त्ता जिन पद कहा॥
मद जय तुम सम करें हमें आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥16॥

ॐ ह्रीं मदनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअर नाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तन-छिद्रों से बूँद पसीना जो बहे।
वही स्वेद उसके विजयी उज्ज्वल रहे॥
स्वेद विजय करने हमको आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥ 17॥

ॐ ह्रीं स्वेदनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअर नाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिसे थकावट कहा वही तो खेद है।
खेद विजेता पाते निज-पर भेद है॥

खेद विजय करने हमको आशीष दो।
अरहप्रभु को नमन झुका के शीश हो॥ 18॥

ॐ ह्रीं खेदनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(क्षायिक लब्धियाँ) (स्रग्विणी)

समरसी लीन हे! वीतरागी प्रभो, प्रार्थना आप से हम सभी यह करें।
दोष अपराध अरनाथ होवें क्षमा, हम इसी भावना से नमोस्तु करें॥

पूर्ण ज्ञानावरण शत्रु को तुम हने,
राज्य कैवल्य पा निज विजेता बने।
घोर अज्ञान निज सम हमारा हरो,
पूर्ण शुद्धात्म सर्वज्ञ हमको करो॥
समरसी लीन हे! ....॥ 19॥

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणनिमित्तदोषाचरणविनाशन समर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दर्श गुण का विरोधी नशाए तुम्हीं।
पाए कैवल्य दर्शन बने निज गुणीं॥
देव-दर्शन मिले दर्श प्रभु दीजिए।
आत्म दर्शन विरोधी नशा दीजिए॥
समरसी लीन हे! ....॥ 20॥

ॐ ह्रीं दर्शनावरणनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दान में विघ्न-बाधा करम तुम हरे।
पाए क्षायिक महादान निज का करे॥
दान दे तत्त्व झोली हमारी भरो।
दान में विघ्न-बाधा हमारी हरो॥
समरसी लीन हे! ....॥ 21॥

ॐ ह्रीं दानान्तरायनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

लाभ में विघ्न-बाधा करम तुम हरे।
पाए क्षायिक महालाभ निज का करे॥

लाभ दे धर्म झोली हमारी भरो।
लाभ में विघ्न-बाधा हमारी हरो॥
समरसी लीन हे! ....॥ 22 ॥

ॐ ह्रीं लाभान्तरायनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भोग में विघ्न-बाधा करम तुम हरे।
पाए क्षायिक महाभोग निज का करे॥
भोग दे आत्म झोली हमारी भरो।
भोग में विघ्न-बाधा हमारी हरो॥
समरसी लीन हे! ....॥ 23 ॥

ॐ ह्रीं भोगान्तरायनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ-श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

विघ्न उपभोग बाधा करम तुम हरे।
पाए क्षायिक उपभोग निज का करे॥
दे स्व-उपभोग झोली हमारी भरो।
विघ्न उपभोग बाधा हमारी हरो॥
समरसी लीन हे! ....॥ 24 ॥

ॐ ह्रीं उपभोगनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

वीर्य में विघ्न-बाधा करम तुम हरे।
पाए क्षायिक महावीर्य निज जय करे॥
वीर्य दे ध्यान झोली हमारी भरो।
वीर्य में विघ्न-बाधा हमारी हरो॥
समरसी लीन हे! ....॥ 25 ॥

ॐ ह्रीं वीर्यनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आप सम्यक्त्व के हर विरोधी हरे।
आत्म सम्यक्त्व क्षायिक सुश्रद्धा वरे॥
देव गुरु शास्त्र की आत्म श्रद्धा भरो।
कर्म श्रद्धा विरोधी हमारे हरो॥
समरसी लीन हे! ....॥ 26 ॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व-सम्यक्त्वनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आप चारित्र के हर विरोधी हरे।
शुद्ध चारित्र क्षायिक स्वरूपी वरे॥
पाप-पुण्याचरण बिन हमें तुम करो।
कर्म चारित विरोधी हमारे हरो॥
समरसी लीन हे! ....॥ 27 ॥

ॐ ह्रीं चारित्रनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

पुण्य अर्जित करें, अर्घ अर्पित करें।
किन्तु कुछ भी नहीं माँगते दीन हो॥
क्योंकि तुम वीतरागी उपेक्षक रहे।
राग बिन द्वेष बिन आप निजलीन हो॥

पेड़ की छाँव में छाँव क्या माँगना।
किन्तु फिर भी अगर दीजिए तो यही॥
रोज सेवा तुम्हारे चरण की मिले।
कर न देना हमें दूर खुद से कभी॥

ॐ ह्रीं समस्तविधनिमित्तदोषाचरणविनाशनसमर्थ श्रीअरनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

जिनशासन अरनाथ से, चेत उठा चैतन्य।
जिनको नमोस्तु कर हुए, सभी भक्त हम धन्य॥
धीरे-धीरे हम करें, गुण गाकर कुछ शोर।
वीतरागता प्राप्ति को, आये प्रभु की ओर॥

(मालती)

हे अरनाथ! रहो जयवंत, रहो जयवंत सदा तुम स्वामी।
रोज तुम्हें हम पूज रहे नित, रोज तुम्हें नत माथ नमामि॥

खोज रहे उस पुद्गल को, जिसने तुमरी यह देह सँवारी।
सुन्दर हो इतने तुमको अब, नजर लगे ना आज हमारी॥ 1॥

एक कहो प्रभु बात हमें तुम, सुंदरता इतनी कब पायी।
सुन जिसको खुद मुक्ति-वधू अब, खोज तुम्हें जिन दर्शन पायी॥
देख तुम्हारी सुंदरता को, फूल समान बड़ी शरमायी।
नत् नयना वरमाल लिए वह, मुक्ति स्वयंवर को ललचायी॥ 2॥

आप उसी पर मोहित होकर, छोड़ गए रतिनाथ जवानी।
चौदह रत्न नवो निधि को तज, छोड़ गए सब राज-रु-रानी॥
चक्र सुदर्शन छोड़ गए सब, छोड़ गए सब माल-रु-माला।
रूप दिगम्बर से तुमने निज, आत्मस्वरूप निखार हि डाला॥ 3॥

दोष अठारह पूर्ण नशा तुम, निर्मल दर्पण सम अविकारी।
क्षायिकलब्धि तभी प्रकटी नव, जय हो! जय हो! नाथ तुम्हारी॥
खूब किए उपकार सभी पर, पार करो भव-यान हमारा।
जो मन में तुमको धर ले वह, शीघ्र बने शिव राज दुलारा॥ 4॥

त्याग तपस्या खूब करो सब, पूजन पाठ भी खूब रचा लो।
खूब करो धन दान दया सब, खूब सभी व्रत शील सँभालो॥
जो मिलता इससे वह भी सब, मात्र मिले क्षण में प्रभु द्वारा।
सो अरनाथ प्रभु के दर्शन, हों हमको यह भाव हमारा॥ 5॥

दर्शन ज्ञान महागुण आदिक, पूज्य अनंत गुणों के स्वामी।
दुर्लभ पूजित वंदित वे गुण, आप बने प्रभु अन्तरयामी॥
हो कुछ लेकिन अन्त न उनका, कौन कहे वह पूर्ण कहानी।
लेकिन अन्त हुए थुति से वह, सो हम रोज करें प्रणमामि॥ 6॥

आत्म स्वरूप मिले हमको बस, सो प्रभु को हम शीश नवाते।
भक्ति-नमन भी सिद्धि करे सो, विध-विध के हम पथ अपनाते॥

इसविध उसविध किसविध भी प्रभु, अपनी बिगड़ी आप बना लो।
देर अवेर भले प्रभु हो पर, 'सुव्रत' को निज पास बुला लो॥ 7॥

(सोरठा)

भुक्ति मुक्ति दे दान, आत्म स्वरूपी सुख भरें।
अतः किए गुणगान, धर्म ध्यान अपना करें॥
धर्मध्यान का लक्ष्य, शुक्ल ध्यान पाएँ कभी।
बने भक्ति में दक्ष, अर-प्रभु को वंदन अभी॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

(दोहा)

अरनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, अरहनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

॥ इति श्री अरनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

सिद्ध क्षेत्र अतिशय जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
पूर्ण 'पवाजी' में हुआ, श्री अरनाथ विधान॥
दो हजार चौदह प्रथम, मंगल अट्ठाईस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्।॥

आरती

(लय : इह विधि मंगल .....)

जगमग-जगमग ज्योति जला के, करें आरती हम गुण गा के।
परम पूज्य अरनाथ प्रभु को, करें नमोस्तु शीश झुका के॥
जगमग-जगमग ज्योति .....।

आप मित्र सेना के नन्दन, धार्मिक राजा पिता सुदर्शन।
आतम रसिया जग उपकारी, करें आपका हम अभिनन्दन॥
जगमग-जगमग ज्योति .....॥ 1॥

कामदेव में काम न जन्मा, चक्री को भव चक्र न भाया।
तीर्थंकर ने कर्म नशा के, सिद्धचक्र अविनश्वर पाया॥
जगमग-जगमग ज्योति .....॥ 2॥

चौदह रत्न नवों निधियों को, छोड़ गये वन स्व-रानियों को।
मुक्ति स्वयंवर को रच डाले, पाये निज की निज निधियों को॥
जगमग-जगमग ज्योति .....॥ 3॥

यह संसार कर्म की रैली, इसमें आतम दुखी अकेली।
डोर थाम लो पार लगा दो, चाहें क्या? फिर चेला-चेली॥
जगमग-जगमग ज्योति .....॥ 4॥

तुम सर्वज्ञ आत्म धर्मालु, भक्त आपके हम श्रद्धालु।
'सुव्रत' की निज ज्योति जला दो, अरे! दयालु, अरे! कृपालु॥
जगमग-जगमग ज्योति .....॥ 5॥